प्रकाशन तिथि : 01 अप्रेल, 2021
प्रेषण तिथि : 04 अप्रेल, 2021

'डाक पंजियन सं. जयपुर सिटी/247/2021-23
स.प.सं. 66332/97

पथ-प्रेरक

पाक्षिक

वर्ष 25 | अंक 02 | कुल पृष्ठ: 8 | एक प्रति: रुपए 7.00 | वार्षिक : रुपए 150/-

केन्द्र में EWS विसंगतियों को लेकर अभियान का आगाज

केन्द्र सरकार की नौकरियों एवं शिक्षण संस्थानों में आर्थिक आधार पर आरक्षण की शर्तों, प्रक्रिया के सरलीकरण, अन्य आरक्षित वर्ग की तरह सुविधाएं देने एवं स्थानीय राजनीतिक संस्थाओं के चुनावों में इस आरक्षण को लागू करवाने को लेकर प्रधानमंत्री जी तक मांग पहुंचाने हेतु श्री क्षात्र पुरुषार्थ फाउंडेशन द्वारा 27 मार्च से अभियान प्रारंभ किया गया। इस अभियान के प्रथम चरण में पंचायती राज एवं स्थानीय स्वशासी संस्थाओं के जनप्रतिनिधियों से माननीय प्रधानमंत्री जी को ज्ञापन भिजवाया जाएगा एवं संबंधित जनप्रतिनिधि से श्री क्षात्र पुरुषार्थ फाउंडेशन के लैटर पैड पर सहयोग की सहमति हेतु लिखवा कर लिया जाएगा। उल्लेखनीय है कि फाउंडेशन द्वारा राज्य सरकार तक भी इसी तरीके से इस मांग को पहुंचाया गया था और उसका परिणाम भी प्रकट हुआ। सभी सहयोगी जनप्रतिनिधियों से संपर्क कर रहे हैं और उनसे लिखवा कर ले रहे हैं। ऐसे लगभग 1000 जनप्रतिनिधियों समर्थन पत्र माननीय प्रधानमंत्री जी को भिजवाने का लक्ष्य रखा गया है।

हम सानिध्य में रहकर सारुप्य हो रहे हैं : संघप्रमुख श्री

(सालासर और पांचोटा में प्रशिक्षण शिविर सम्पन्न)

इस एकांत और नीरव स्थान पर यह शिविर एक नया ही सबक हमको देता है। थोड़ी देर आप लोगों के साथ रहा, अच्छा लगा। मुझे यह अनुभव आज ही नहीं अनेकों बार हुआ है कि आप मेरे ही हैं और मैं आपका ही हूँ। संघ मेरा ही है, मैं संघ का ही हूँ। ऐसा लगता है जैसे हम सान्निध्य में रहकर सारूप्य भी हो रहे हैं। सालासर में श्री क्षात्र पुरुषार्थ फाउंडेशन के सहयोगियों के लिए आयोजित श्री क्षत्रिय युवक संघ के प्रशिक्षण शिविर में 13 मार्च को विदाई संदेश देते हुए माननीय संघप्रमुख श्री ने उपर्युक्त बात कही। उन्होंने कहा कि यहां भगवान शिव विराजमान हैं। शिव का अर्थ होता है कल्याणकारी। जिस प्रकार उनकी सारी गतिविधियां हमारे लिए कल्याणकारी होती हैं उसी प्रकार श्री क्षत्रिय युवक संघ भी केवल हमारा कल्याण ही चाहता है। शिव को आशुतोष भी कहा गया है क्योंकि वे भक्त की तुच्छतम भेंट को भी पाकर अत्यंत प्रसन्न होते हैं। संघ को भी आप क्या भेंट दे सकते हैं, यह इतना महत्त्वपूर्ण नहीं है, महत्त्वपुर्ण है हमारा एकरूप, सारूप्य बंधन। तब कहने को कुछ शेष नहीं रहता। सारी सृष्टि शिवमय अनुभव होने लगती है। कोई बुरा नहीं दिखाई देता, कोई शत्रु दिखाई नहीं देता। कोई अपना-पराया नहीं दिखाई देता। ऐसी एकनिष्ठता और ध्येयनिष्ठा ही ध्यानस्थ होने की सर्वोत्तम स्थिति है। इस प्रकार भगवान के व संघ के सान्निध्य में रहकर हमें अपने कर्त्तव्य का बोध हो जाता है। संघ की साधना करते-करते हम रुकेंगे नहीं, झुकेंगे नहीं, टूटेंगे नहीं - यह हमारा संकल्प है। यही भगवान शिव का संकल्प है।

(शेष पृष्ठ 7 पर)

आर्थिक आधार पर आरक्षण में मिली छूट

आर्थिक आधार पर कमजोर वर्ग के लिए घोषित 10% आरक्षण की अहर्ता संबंधी विसंगतियों को दूर करने के बाद राजस्थान के मुख्यमंत्री ने एक और महत्वपूर्ण एवं राहत भरा कदम उठाया है। विधानसभा में बजट बहस का जबाब देते हुए उन्होंने इस वर्ग के लिए अवसरों में अन्य आरक्षित वर्गों की तरह ही अधिकतम आयु एवं फीस में छुट की घोषणा की है। घोषणा के तुरंत बाद ही इस बाबत सेवा नियमों में आवश्यक संशोधन हेतु प्रक्रिया भी प्रारंभ कर दी है। साथ ही ऐसी सभी भर्तियों में नये नियमों को लागू करने की भी घोषणा की है जिनकी परीक्षा अभी नहीं हुई है। माननीय मुख्यमंत्री जी की यह घोषणा इस वर्ग के अभ्यर्थियों के लिए बड़ा कदम है और इस बाबत माननीय संघप्रमुख श्री ने दूरभाष पर मुख्यमंत्री जी का आभार व्यक्त किया है। उल्लेखनीय है कि श्री क्षात्र पुरुषार्थ फाउंडेशन द्वारा इस बाबत संपूर्ण राजस्थान में 100 से अधिक स्थानों पर ज्ञापन देकर सरकार का ध्यान आकर्षित किया गया था।

'पिलानी का राजपूत छात्रावास, जहां संघ का विचार पनपा'

यह झुंझुनूं जिले के पिलानी कस्बे का राजपूत छात्रावास है। यह वही ऐतिहासिक छात्रावास है जिसके एक कमरे में रहकर पूज्य तनसिंह जी ने अपनी स्नातक की पढाई पूर्ण की थी। पूज्य तनसिंह जी ने चौपासनी स्कूल जोधपुर से मैट्रिक की थी एवं तत्पश्चात आगे के अध्ययन के लिए पिलानी पधारे। छात्रावास के प्रबंधक की जानकारी के अनुसार 12 कमरों के इस छात्रावास के कमरा संख्या 12 में पूज्य तनसिंह जी रहा करते थे और इसी कमरे में 1944 की दीपावली की रात्रि को उन्होंने श्री क्षत्रिय युवक संघ के रूप में संगठन बनाकर कार्य करने का संकल्प लिया था और उनका वही संकल्प 22 दिसंबर 1946 को श्री क्षत्रिय युवक संघ के वर्तमान स्वरूप में परिवर्तित हुआ। इस वर्ष संघ अपना हीरक जयंती वर्ष मना रहा है।

संघ साहित्य के ऐतिहासिक संदर्भ

पूज्य श्री तनसिंह जी द्वारा रचित बदलते दृश्य पुस्तक के सत्रहवें प्रकरण 'बदलते दृश्य' में जोधपुर के शासक राव सूजा जी का उल्लेख आया है, इस बार हम उनके बारे में जानेंगे।

राव सूजा जोधपुर के संस्थापक राव जोधा के पुत्र एवं जोधपुर के शासक राव सातल के छोटे भाई थे। इनका जन्म वि.सं.1496 में हुआ था। यद्यपि राव सातल के बाद उनका उत्तराधिकारी उनके दत्तक पुत्र नरा (राव सूजा का पुत्र) जोधपुर की राजगद्दी का अधिकारी थे, परन्तु पिता ने समझा-बुझाकर उन्हें फलोदी में रखा और स्वयं वि.सं.1548 के वैशाख में जोधपुर की राजगद्दी पर बैठे। इससे पहले वि सं. 1521 मे राव जोधा ने राव सूजा को सोजत परगने का प्रबन्ध सौंपा था। वि. सं. 1545 में जब मुसलमानों ने सोजत पर आक्रमण किया, उस समय राव सूजा ने वीरता पूर्वक सोजत की रक्षा की थी।

वि.सं.1548 के राव सातल के मल्लूखां और मीर घुड़ले खां के साथ युद्ध में राव सूजा शामिल थे और अपनी वीरता का परिचय दिया था। आततायियों द्वारा तीज का त्योंहार मना रही कुंवारी कन्याओं का अपहरण कर लिया गया तब पीपाड़ के पास कोसाणा गांव में युद्ध हुआ, इस युद्ध में राव सातल एवं राव सूजा के साथ राव दूदा भी शामिल थे। राव सातल ने घुड़ले खां को मार कर तीजणियों को आजाद करवा दिया। इस युद्ध में राव सातल वीरगति को प्राप्त हुए। कोसाणा में जहां महिलाओं को मुक्त कराया गया, वहीं राव सातल का अंतिम संस्कार किया गया। वहां आज भी चबूतरा बना हुआ है। तीजणियों ने घुड़ले खां के प्रतीक के रूप में मिट्टी का छोटा घड़ा बनवाया और घुड़ले खां के चेहरे पर हुए घावों के प्रतीक के रूप में उसमें छेद करवा कर उसमें एक दीपक रखा और अपने सिर पर रख घर-घर घूमी तथा लोगों को ये कहानी सुनाई। जोधपुर में चैत्र बदी अष्टमी को इस घुड़ले का मेला आयोजित होता है। चैत्र सुदी तीज को घुड़ले के पात्र को पानी में विसर्जित कर दिया जाता है। इस पात्र में जलता रहने वाला दीपक घुड़ले खां और इस पर बने छेद उसके चेहरे पर युद्ध के दौरान हुए घावों को दशार्ते हैं। राव सूजा के राज्यकाल में ही राव बीका ने राज्य चिन्हों के लिए जोधपुर पर आक्रमण किया था, जिसमें राव सूजा की माता ने राज्य चिन्ह दिलाकर सुलह करवा दी थी। सूजा के शासनकाल में ही रायपुर, जैतारण, चाणोद आदि स्थानों के सिंधल राठौड़ों से उनका संघर्ष हुआ। वि.सं.1555 में राव सूजा ने रायपुर के सिंधलों पर आक्रमण करने अपने पुत्र शेखा को भेजा था और वि.सं.1560 में चाणोद के सिंधलों पर स्वयं सूजा ने आक्रमण किया था। राव जोधा के समय सिंधल मेवाड़ वालों के मातहत थें। परन्तु उनके समय ही उन्होंने मारवाड़ की अधीनता स्वीकार कर ली थी। राव सूजा के समय भी पहले तो दोनों स्थानों के सिंधलों ने सामना किया पर अंत में पराजित होकर राव सूजा की अधीनता स्वीकार कर ली। राव सूजा के बड़े पुत्र बाघा थे, जो वि. सं.1571 में अचानक मृत्यु को प्राप्त हो गये। राव सूजा इससे बड़े दुखी हुए। बाघा होनहार राजकुमार थे। एक बार मेवाड़ के शक्तिशाली शासक महाराणा सांगा ने सोजत पर अधिकार करने के लिए अपनी सेना भेजी पर कुंवर बाघा ने बहादुरी से मुकाबला कर मेवाड़ की सेना को वापस भेज दिया। राव सूजा का 24 वर्ष राज्य करके 73 वर्ष की अवस्था में वि.सं.1572 के कार्तिक मास में स्वर्गवास हो गया। राव सूजा एक शांतिप्रिय शासक माने जाते हैं। उनके बाघा, नरा, शेखा, देवीदास, ऊदा, प्रागदास, सांगा, नापा, पृथ्वीराज, जोगीदास व गोपीनाथ ये ग्यारह पुत्र थे जिनसे राठौड़ों की दस उप-शाखाएं प्रचलित हुईं।

ग्रंथ संदर्भ - राठौड़ राज्य का उदय और विस्तार पृष्ठ 139,
श्री भूर सिंह जी राठौड़
डॉ. श्री लक्ष्मण सिंह जी गड़ा

-प्रेषक : सवाई सिंह बेलवा

मालवा का परमार वंश

सीयक द्वितीय के दो पुत्र थे मुंज और सिन्धुराज। सीयक द्वितीय के बाद उसका ज्येष्ठ पुत्र मुंज शासक बना जो अपनी विद्वता के कारण इतिहास में वाक्पतिराज नाम से भी प्रसिद्ध है। मुंज एक महत्वकांक्षी शासक था और राज्य विस्तार के लिए उसने अनेक युद्ध लड़े। मुंज के समय कल्चुरी शासक युवराज द्वितीय था। मुंज ने सैन्य अभियान का प्रारम्भ कल्चुरी राज्य पर आक्रमण करके किया। युवराज द्वितीय को परास्त कर मुंज उसकी राजधानी त्रिपुरी तक जा पहुंचा। मुंज ने गुहिल वंश के शासक शक्ति कुमार को परास्त कर उसकी राजधानी को लूटा। मुंज ने नाडौल के चौहानों पर आक्रमण कर उन्हें भी परास्त किया और आबू को अपने आधिपत्य में ले लिया। अपने विजय अभियान को आगे बढ़ाते हुए मुंज ने गुजरात के चालुक्य शासक मूलराज पर आक्रमण किया। मुंज की शक्ति से भयभीत चालुक्य शासक ने राज्य छोड़ कर राष्ट्रकूट शासक के यहां शरण ली। मुंज के समय लाट प्रदेश का शासक वारप्प था जिसे मुंज ने परास्त किया। मुंज ने दक्षिण में तैलंग राज्य के चालुक्य नरेश तैल द्वितीय को भी अनेक बार परास्त किया। तैल द्वितीय के विरुद्ध अपने अंतिम अभियान में मुंज को असफलता प्राप्त हुई औरप मुंज को पराजय का सामना करना पड़ा और उसे बंदी बना लिया गया। मुंज के मंत्रियों ने उसे कारागृह से मुक्त कराने की योजना बनाई लेकिन तैल द्वितीय की बहिन मृणालवती के कारण ये योजना असफल हो गई और मुंज का वध कर दिया गया। मुंज स्वयं विद्वान था और अनेक विद्वान उसके यहां आश्रय पाते थे जिनमें धनपाल, पद्मगुप्त, धनञ्जय, हलायुध आदि प्रमुख थे। मुंज की मृत्यु के बाद उसका छोटा भाई सिन्धुराज शासक बना। सिन्धुराज ने दक्षिणी चालुक्य शासक सत्याश्रय को हराकर उन प्रदेशों पर पुनः अधिकार किया जिन पर तैल द्वितीय ने मुंज को हराकर अधिकार कर लिया था। पदमगुप्त के नव साहसांक्रचरित से सिन्धुराज की अनेक विजयों के बारे में पता चलता है। सिन्धुराज ने बस्तर के नलवंशी शासक के द्वारा सहायता मांगने पर उसकी सहायता करते ब्रजप्रदेश (मध्यप्रदेश) के शासक वज्रकुश को परास्त कर दिया। सिन्धुराज ने कौशल के सोमवंशी शासक को भी परास्त किया। उत्तर में सिन्धुराज ने हुण मण्डल के शासक को हराया तथा वाजड़ के परमार शासक चन्द्रप के विद्रोह का दमन किया। सिन्धुराज को गुजरात तथा लाट के चालुक्य शासकों के विरुद्ध भी संघर्ष करना पड़ा। सिन्धुराज ने लाट के चालुक्य शासक गोगिराज को तो परास्त कर दिया, परन्तु उसे गुजरात के चालुक्य शासक मूलराज प्रथम के पुत्र चामुण्डराज के हाथों परास्त होना पड़ा। सिन्धुराज अपने वंश का एक महान व योग्य शासक सिद्ध हुआ।

फार्म-4 (नियम-8)

1. प्रकाशन स्थान	ए-8, तारानगर, झोटवाड़ा, जयपुर-302 012
2. प्रकाशन अवधि	पाक्षिक
3. मुद्रक का नाम	लक्ष्मणसिंह
नागरिकता	भारतीय
क्या विदेशी है	नहीं
पता	ए-8, तारानगर, झोटवाड़ा, जयपुर-302 012
4. प्रकाशक का नाम	लक्ष्मणसिंह
नागरिकता	भारतीय
क्या विदेशी है	नहीं
पता	ए-8, तारानगर, झोटवाड़ा, जयपुर-302 012
5. सम्पादक का नाम	लक्ष्मणसिंह
नागरिकता	भारतीय
क्या विदेशी है	नहीं
पता	ए-8, तारानगर, झोटवाड़ा, जयपुर
6. उन व्यक्तियों के नाम व पते जो समाचार पत्र के स्वामी हों तथा जो समस्त पूंजी के एक प्रतिशत से अधिक के साझेदार व हिस्सेदार हों।	पूर्ण स्वामित्व-श्री संघशक्ति प्रकाशन प्रन्यास ए-8, तारानगर,झोटवाड़ा, जयपुर

मैं एतद् द्वारा घोषित करता हूँ कि मेरी अधिकतम जानकारी एवं विश्वास के अनुसार ऊपर दिये गये विवरण सत्य हैं।

लक्ष्मणसिंह
प्रकाशक

01.04.2021

जारी है हीरक जयन्ती वर्ष कार्यक्रमों की श्रृंखला

बड़ेली

भोपालगढ़

श्री क्षत्रिय युवक संघ के हीरक जयन्ती वर्ष के अंतर्गत देशभर में कार्यक्रम आयोजित हो रहे हैं। इसी क्रम में आयोजित होने वाले 75 बड़े कार्यक्रमों की श्रृंखला में जैसलमेर जिले के जनप्रतिनिधियों एवं समाज के प्रबुद्ध लोगों का एक कार्यक्रम 14 मार्च को रामदेवरा के दक्षिण में रूणिचा कुआं स्थित चिलाय माता मंदिर में आयोजित हुआ। कार्यक्रम को संबोधित करते हुए संघ के केंद्रीय कार्यकारी देवीसिंह माडपुरा ने कहा कि संघ साधना का मार्ग है। इस मार्ग की विशेषता और महत्त्व को मार्ग पर चलने वाला साधक ही अनुभव कर सकता है। निरंतर अभ्यास से ही जीवन में सद्गुणों का प्रादुर्भाव होता है। वही सुख और शांति का आधार है। केंद्रीय जल शक्ति मंत्री गजेन्द्र सिंह महरोली ने अपने उद्बोधन में कहा कि संघ ने अपनी 75 वर्ष की यात्रा में न केवल अपने महत्त्व को प्रतिपादित किया है अपितु समाज को भी इसकी आवश्यकता की अनुभूति क्रमशः गहरी हुई है। एक व्यक्ति के जीवनकाल में 75 वर्ष का समय अधिक हो सकता है परंतु एक संस्था के लिए यह अवधि अधिक नहीं है। संघ सच्चे क्षत्रिय का निर्माण करने का कार्य कर रहा है और सच्चा क्षत्रिय कभी किसी के साथ अन्याय नहीं कर सकता। न्याय उसका सहज स्वभाव है। आज इस कार्यक्रम में हम सब जनप्रतिनिधियों को बुलाया गया है, हमें संघ के संदेश को समझना चाहिए एवं न्यायपूर्वक अपने दायित्व का हमारे पूर्वजों की प्रतिष्ठा के अनुरूप निर्वहन करना चाहिए। प्रताप पुरी जी महाराज ने भी समारोह को सम्बोधित करते हुए कहा कि मनुष्य में गुण व अवगुण संसर्ग से ही आते हैं अतः बचपन से ही सत्संग का अभ्यास आवश्यक है। पोकरण संभाग प्रमुख गणपत सिंह अवाय ने कहा कि बड़े कार्य को करने के लिए बहुत अधिक धैर्य और संघर्ष की आवश्यकता होती है। संघ ने अपने 75 वर्ष के जीवनकाल में अनेक विपरीत परिस्थितियों का सामना किया है, अनेक अपनों का विरोध सहा किंतु उन सभी अपनों को गले लगाकर संघ का अपने उद्देश्य की ओर बढ़ना निरंतर जारी है। यह धैर्य और संघर्ष का स्पष्ट प्रमाण है। पूर्व प्रधान सुनीता भाटी ने कहा कि हमें महिलाओं को स्वावलंबी बनने के लिए प्रोत्साहित करने की आवश्यकता है। देवीसिंह भणियाणा ने भी अपने विचार व्यक्त किए। कार्यक्रम के दौरान पूर्व विधायक सांगसिंह व शैतानसिंह, जिला प्रमुख प्रताप सिंह रामगढ़, सम प्रधान तनेसिंह, लखसिंह आदि के साथ जिले भर से सरपंच, जिला परिषद सदस्य तथा पंचायत समिति सदस्य समाजबंधुओं व सहयोगियों सहित उपस्थित हुए। कार्यक्रम का संचालन रामदेवरा नाचना प्रांत प्रमुख अमरसिंह रामदेवरा ने किया।

मध्य गुजरात संभाग के आणंद जिले में 14 मार्च को आणंद इंटरनेशनल स्कूल, मोगरगांव में प्रातः 09:30 से अपराह्न 12:30 बजे तक स्नेहमिलन का आयोजन हुआ। कार्यक्रम को संबोधित करते हुए भावनगर संभाग प्रमुख धर्मेंद्र सिंह आम्बली ने कहा कि पूज्य तनसिंह जी ने समाज की दुर्दशा के मूल कारण को समझकर उसके निवारण के लिए श्री क्षत्रिय युवक संघ की स्थापना की। हमारे समाज ने अपने पूर्वजों के त्याग और बलिदान के मार्ग को छोड़ दिया और स्वच्छंदता का जीवन जीने लगे, यही हमारे पतन का कारण बना। इसे दूर करके हमें पुनः कर्त्तव्यपालन में प्रवृत्त करने का कार्य संघ कर रहा है। मध्य गुजरात संभाग प्रमुख दीवान सिंह कानेटी तथा श्री चरोत्तर राजपूत समाज, आणंद की ओर से हंसाकंवर बा अडास व लाल सिंह वड़ोदिया (पूर्व राज्यसभा सांसद) ने भी कार्यक्रम को संबोधित किया। खेत सिंह चांदेसरा ने संघ परिचय प्रस्तुत किया। श्री चरोत्तर राजपूत समाज, आणंद तथा सौराष्ट्र कच्छ राजपूत समाज ने व्यवस्था में सहयोग किया। कार्यक्रम में मातृशक्ति सहित सैकड़ों समाजबंधु सम्मिलित हुए। इसी दिन तीन से पांच बजे तक वडोदरा शहर स्थित वाघेश्वरी फार्म में भी स्नेहमिलन का आयोजन हुआ। कार्यक्रम को भावनगर संभाग प्रमुख धर्मेंद्र सिंह आम्बली, मध्य गुजरात संभाग प्रमुख दीवान सिंह कानेटी, श्री सौराष्ट्र कच्छ राजपूत समाज, वडोदरा के प्रमुख महेन्द्र सिंह देवलिया, समग्र गुजरात राजपूत समाज संगठन के संयोजक विक्रम सिंह मियागांव ने संबोधित किया। कार्यक्रम में वीरमदेवसिंह कादीपुर (चुडासमा राजपूत समाज के प्रमुख), नवधज सिंह चुडासमा (उद्योगपति), धर्मेंद्र सिंह धनाणा (उद्योगपति), जयराज सिंह वाणा (पुलिस अधीक्षक, स्टेट आईबी), बलदेव सिंह भैंसाणा (पुलिस अधीक्षक, सेंट्रल जेल, बड़ोदा), नीलेश सिंह राठौड़, नरवीर सिंह, कमलेश सिंह, जे.डी. झाला, के.बी. जाडेजा, जे.टी. राणा आदि गणमान्य लोगों सहित सैकड़ों समाजबन्धु उपस्थित रहे। गोहिलवाड़ संभाग के भावनगर शहर प्रांत में भी 14 मार्च को संघ तीर्थदर्शन कार्यक्रम का आयोजन हुआ जिसमें संघ चर्चा के साथ साथ हीरक जयंती का निमंत्रण भी दिया गया।

मोगरगांव

जयपुर स्थित केन्द्रीय कार्यालय 'संघशक्ति' में 14 मार्च को हीरक जयन्ती के उपलक्ष्य में बैठक का आयोजन हुआ जिसमें जयपुर शहर के विधानसभा क्षेत्रों से सहयोगियों को निमंत्रित किया गया तथा उन्हें हीरक जयन्ती वर्ष कार्यक्रम के सम्बंध में जानकारी प्रदान की गई। प्रत्येक रविवार को इस प्रकार की बैठकें रखने का निर्णय हुआ जिसकी जिम्मेदारी गजेंद्र सिंह बड़वाली व सहयोगियों ने ली। जयपुर में ही झोटवाड़ा क्षेत्र के प्रेमनगर में भी 14 मार्च को पारिवारिक स्नेहमिलन का आयोजन किया गया। कार्यक्रम को संबोधित करते हुए संभाग प्रमुख राजेन्द्र सिंह बोबासर ने कहा कि आज धन की दौड़ में लग कर सभी संस्कार व संस्कृति की उपेक्षा कर रहे हैं। संघ इस अंधी दौड़ के प्रति हमें सचेत कर रहा है। वरिष्ठ स्वयंसेवक भवानी सिंह मुंगेरिया ने कहा कि हमारे पूर्वजों के चरित्र की महानता के कारण ही आज भी सभी उन्हें स्मरण करते हैं। यह चारित्रिक महानता केवल साधना से ही प्राप्त की जा सकती है। संघ की साधना भी इसी के लिए है। सुमेर सिंह सींवा (पार्षद) ने क्षत्रिय के कर्त्तव्य कर्म पर विचार व्यक्त किए। कार्यक्रम में कोलोनी के समाजबन्धु व सहयोगी उपस्थित रहे। भंवर सिंह बांजाकुड़ी ने आयोजन का जिम्मा संभाला। दौसा जिले के मोचिंगपुरा में भी 14 मार्च को स्नेहमिलन कार्यक्रम का आयोजन किया गया जिसमें झांपडावास, डाभाच, कारोली, भांडारेज, खोररा कलां आदि गांवों के समाजबन्धु सम्मिलित हुए। कार्यक्रम में प्रांतप्रमुख मदन सिंह बामण्या सहयोगियों सहित उपस्थित रहे। उन्होंने उपस्थित समाजबंधुओं से क्षात्र धर्म, समाज की वर्तमान स्थिति आदि विषयों पर चर्चा की तथा हीरक जयन्ती वर्ष के संबंध में जानकारी प्रदान की। नागौर संभाग के लाडनूं-सुजानगढ़ प्रांत के अंतर्गत रेड़ा गांव में भी संघ तीर्थदर्शन कार्यक्रम 14 मार्च को आयोजित हुआ जिसमें स्वयंसेवक बलजीत सिंह नाथावतपुरा ने संघ के उद्देश्य और दर्शन की व्याख्या की और कहा कि रेड़ा संघ के तृतीय संघप्रमुख श्रद्धेय नारायणसिंह रेडा की जन्म स्थली है इसलिए यहाँ सभी संघ से भली भांति परिचित हैं। प्रांतप्रमुख विक्रम सिंह ढींगसरी ने हीरक जयन्ती वर्ष के संबंध में जानकारी प्रदान की। कार्यक्रम में कुशालसिंह (सरपंच), समंदर सिंह, रघुवीर सिंह, दिलीप सिंह आदि सहयोगियों व समाजबंधुओं सहित उपस्थित रहे। **(शेष पृष्ठ 6 पर)**

पोकरण

संपादकीय

'हमारे उच्चादर्श एवं समकालीन समीक्षक'

हमारे इतिहास को हम पढ़ते हैं तो पाते हैं कि हमारे पूर्वजों ने हर क्षेत्र में उच्चादर्श स्थापित किए। अपने आदर्शों एवं जीवन मूल्यों के प्रति उनका अतिशय आग्रह समकालीन विचारकों के लिए कल्पना लोक की सी बातें लगती हैं और इसीलिए वे उसे स्वीकार करने की अपेक्षा अपनी धारणाओं के आधार पर तथ्य गढ़ लेते हैं और फिर उन्हें ही सत्य घोषित कर प्रचारित करते हैं। इसी कारण समकालीन विचारकों, इतिहासकारों एवं साहित्यकारों द्वारा हमारे पूर्वजों का आकलन भ्रमपूर्ण होता गया और कालांतर में उसे प्रमाणिक इतिहास मान लिया गया। उदाहरणार्थ यदि हम मुस्लिम इतिहासकारों की बात करें तो उन्होंने अपने समय में अपने संरक्षकों के जीवन में देखा कि हर शासक अपनी ही संतानों से अपनी रक्षा के प्रति आशंकित रहा। हर सत्ता परिवर्तन रक्त रंजित ही रहा। मुगल काल को ही देखें तो बाबर के बाद हुमायुं ने अपने भाइयों का रक्त बहाया और उसी के भाइयों ने उसे सत्ता से बेदखल भी कर दिया। अकबर ने अपनी सत्ता को सुरक्षित करने के लिए अपने संरक्षक को मारा तो उसके पुत्र जहांगीर ने भी पिता से विद्रोह किया। शाहजहां ने अपने भाइयों का रक्त बहाया तो औरंगजेब ने तो भाइयों को अमानवीय यातना देकर मारने के साथ-साथ अपने पिता को ही कैद कर सत्ता पर कब्जा किया और फिर वृद्ध पिता को पीने के पानी तक को तरसाया। ऐसे माहौल में रहने वाला इतिहासकार, साहित्यकार या लेखक जब हमारे उच्चादर्शों से सींचित से इतिहास को लिखेगा तो वह उसे वास्तविक मानने को तैयार नहीं होता और तथ्यों को अपने समकालीन वातावरण के अनुरूप ही बदल कर लिखेगा। ऐसे वातावरण में रहने वाला लेखक यह कैसे विश्वास कर ले कि कोई चुण्डा (चुण्डावतों के पितृ पुरुष) अपने पिता द्वारा विनोद में कही बात पर ही अपना ही नहीं बल्कि अपनी संतानों का भी राज्याधिकार सदा सर्वदा के लिए त्याग सकता है। इसीलिए उसे यह बात कल्पना सी लगती है। अतिरंजित सी लगती है। उसे यह विश्वास नहीं होता कि कोई दुर्गा जी किसी कन्या द्वारा शेखाजी से विवाह के हठ के कारण अपना राज्याधिकार त्याग कर उक्त कन्या से होने वाली संतान के मातहूत के रूप में सहयोगी बनने को तत्पर हो सकते हैं। यही स्थिति अंग्रेजों के शासन के समकालीन इतिहासकारों एवं लेखकों की हुई। उन्होंने सदैव सत्ता के लिए षड्यंत्र देखे, राष्ट्र की परवाह किए बिना किसी बाहरी दुश्मन को अपने स्थानीय दुश्मनों के दमन में सहयोग लेते देखा और इसी आधार पर उन्होंने यह मिथ्या धारणा बना ली कि पृथ्वीराज जी चौहान को हराने के लिए जयचंद जी ने गौरी को आमंत्रित किया था। उनके एवं उनसे प्रभावित परवर्ती लेखकों के लिए यह कल्पना से परे की बात थी कि क्या कोई राम अपनी पिता की इच्छा पर 14 वर्ष का वनवास स्वीकार कर सकता है या राजथर्म को सर्वोपरि मानकर अपनी सती स्वरूपा पत्नी का भी त्याग कर सकता है। उनके लिए धर्म की स्थापनार्थ भगवान श्री कृष्ण सा उद्यम कल्पना लोक का सा विषय था इसीलिए उन्होंने हमारे इस महान इतिहास को महाकाव्य से संबोधित कर कल्पना लोक के विषय के रूप में चित्रित किया और अफसोस यह कि उनके द्वारा स्थापित मापदंडों में खरा उतरने के लिए हम भी वैसा ही मानने लगे। जब व्यक्ति आत्मलघुता से आवृत होता है तो उसके जीवन मूल्यों के मापदंड अन्य लोग निर्धारित करते हैं और यही हमारे साथ हुआ। हम भी पश्चिम द्वारा या पश्चिम परस्त लोगों द्वारा निर्धारित मापदंडों के अनुरूप अपने आपको तौलने लगे और परिणाम स्वरूप यह मानने लगे कि हमारे पूर्वजों द्वारा स्थापित उच्चादर्श वास्तविकता से परे हैं। उन सिद्धान्तों तक पहुंचने के लिए अपने क्षमताओं की हीनता के कारण विदेशियों ने उन्हें कल्पना कहा और हमने भी अपनी क्षमताओं को उन्नत करने की अक्षमता के कारण उनकी बात को स्वीकार कर लिया और उच्चादर्शों पर संदेह करने लगे कि ऐसा भी हो सकता है क्या? हमारे ही पूर्वजों के महान कार्यों पर हम शक करने लगे और उनके उत्कृष्ट जीवन मूल्यों के प्रति हमारा आकर्षण भी समाप्त हो गया। आज भी ऐसा ही वातावरण है। आज हमारे चारों तरफ जो क्षरण का वातावरण है। उसमें रचे बसे लोग इस बात को स्वीकार करने के लिए तैयार नहीं होते कि बिना स्वार्थ भी कोई कुछ काम कर सकता है क्या? उनके अनुसार हर त्याग के पीछे की प्रेरणा कर्तव्य पालन की उदात्त ईच्छा नहीं होती बल्कि कुछ प्राप्ति की चाह होती है और इसीलिए वे अपनी इस धारणा से ही अपने आसपास की हर घटना, संगठन, संस्था या व्यक्ति का आकलन करते हैं। इसे आकलन कहना भी गलत ही होगा क्यों कि आकलन तो वस्तुनिष्ठ होता है। यहां वे आकलन करने की अपेक्षा अपनी धारणाओं का संबंधित में आरोपण करते हैं और फिर उसी के आधार पर उनके प्रति राय बनाते हैं। इसीलिए श्री क्षत्रिय युवक संघ जैसे उदात्त कार्य की भावना को वे समझ नहीं पाते क्यों कि अपने चारों ओर वे स्वार्थ प्रेरित षड्यंत्र देखते हैं इसीलिए मानते है कि यहां भी ऐसा ही होता होगा। इसीलिए वे प्रायः यह भी कह देते हैं कि संघ तो आदर्शवाद की बात करता है, पुरातन पंथी है। समय के साथ अद्यतन नहीं रहा है। उनके अनुसार संसार जिस क्षरण को प्राप्त हो रहा है उस क्षरण के प्रवाह में शामिल होना ही समय के साथ अद्यतन होता है और इसी धारणा के कारण वे संघ की चाह के बावजूद संघ के साथ लंबे समय तक बने नहीं रह पाते। संघ का स्पष्ट मानना है कि हमारे पूर्वजों का उच्चादर्शमय जीवन केवल अध्ययन का विषय नहीं बल्कि अनुकरण का विषय है और हमारा उधर बढ़ने का निरन्तर अभ्यास हमें सीढ़ी दर सीढ़ी उधर बढ़ाएगा।

खरी-खरी

पीड़ा प्रवृत क्यों नहीं होती?

व्यक्ति के शरीर में यदि पीड़ा होती है और यदि वह उससे पीड़ित अनुभव करता है तो फिर उस पीड़ा को दूर करने में प्रवृत्त होता है। क्रियाशील होता है, उसे दूर करने का उद्यम करना प्रारम्भ करता है। लेकिन यदि वह ऐसा नहीं करता एवं केवल पीड़ा की बात करता है तो इसके दो ही अर्थ निकाले जा सकते हैं। पहला तो यह कि वह केवल पीड़ा की बात ही करता है, वास्तव में उसे कोई पीड़ा है नहीं और दूसरा अर्थ यह निकाला जा सकता है कि उसकी उस पीड़ा की तीव्रता इतनी नहीं है कि वह उसमें तड़फन पैदा कर सके इसीलिए उस पीड़ा को दूर करना उसकी प्राथमिकताओं में शामिल नहीं है, उस पीड़ा को सहन करते जाना उसने अपनी नियति मान ली है। इसीलिए वह उस पीड़ा के साथ ही जिए जा रहा है। पीड़ा का घर हमारा हृदय होता है वहीं उसका जन्म होता है और वह केवल अपने शरीर की पीड़ा से ही पीड़ित नहीं होता बल्कि शरीर से इतर भी अनेक अस्तित्व उसे पीड़ित करते हैं इसीलिए परपीड़ा शब्द का उद्भव हुआ। परिवार की पीड़ा, समाज की पीड़ा, राष्ट्र की पीड़ा, मानवता की पीड़ा आदि अवधारणाएं इसी कारण अस्तित्व में आई हैं और हमारे हृदय की संवेदनशीलता उसे कमोबेश इन सभी पीड़ाओं से पीड़ित करती है। ऐसी पीड़ा जब उद्बोधक हो जाती है, प्रेरणा देने लगती है तो फिर वह क्रियाशील बनाती है और वह पीड़ित व्यक्ति अपनी उस पीड़ा को दूर करने में प्रवृत्त होता है। समाज की पीड़ा की यदि हम बात करें तो हमें अनेक लोग समाज की पीड़ा को प्रकट करते हुए दिखाई देते हैं। सोशल मीडिया की सुलभता ने इस प्रकटीकरण को और अधिक आसान बना दिया है। कोई समाज में शिक्षा के अभाव से पीड़ित है तो कोई जीवन यापन के साधनों की विपुलता न होने से पीड़ित है। कोई इतिहास के प्रति उदासीनता से और उस पर हो रहे आक्रमण से पीड़ित है तो कोई समाज की रूढ़ियों से। कोई परम्पराओं के रक्षण की आवश्यकता से पीड़ित है तो कोई संस्कारहीनता पर। कोई समाज की प्रशासन में कम होती भागीदारी से पीड़ित है तो कोई सरकारी नौकरी के प्रति मोह से। कोई युवाओं में बढ़ रही नशे की लत से पीड़ित है तो कोई उनमें आपराधिक लोगों के प्रति आकर्षण पर। इस प्रकार समाज की विभिन्न पीड़ाओं से पीड़ित लोग जब विभिन्न आभासी एवं भौतिक मंचों पर अपनी पीड़ा व्यक्त करते है तो लगता है कि समाज के लोग समाज के बारे में बहुत सोचते हैं, वे समाज की पीड़ा का अहसास करते हैं और इनका यह अहसास निश्चित तौर समाज में अपेक्षित परिवर्तन लाएगा, समाज की पीड़ा को दूर करेगा और समाज इन सब पीड़ाओं से मुक्त होकर स्वस्थ बनेगा। लेकिन जैसा लगता है वैसा होता दिखाई नहीं देता। विभिन्न कार्यक्रमों के भौतिक मंचों एवं सोशल मीडिया पर प्रकट होने वाली पीड़ा प्रवृत्त नहीं दिखती। यदि लेख के प्रारम्भ में हुए विश्लेषण पर विचार करें तो कारण वे ही दोनों नजर आते हैं। पहला तो यह कि वास्तव में पीड़ा है ही नहीं, केवल पीड़ा की बात भर है। यदि पीड़ा होती तो फिर शांत थोड़े ही बैठने देती क्यों कि पीड़ा तो उद्बोधक होती है, क्रियाशील बनाती है। दूसरा कारण यह है कि पीड़ा तो है लेकिन इतनी नहीं है कि वह क्रियाशील कर सके। पीड़ा के साथ जीने की आदत पड़ गई है या फिर उस पीड़ा को दूर करने की आवश्यकता से अधिक आवश्यक कोई अन्य काम उपलब्ध है इसीलिए इस पीड़ा की केवल बात कर ही संतोष कर लेते हैं। लेकिन मुख्य बात तो यही है कि बात करने से पीड़ा दूर नहीं होगी। पीड़ा को व्यक्त करने मात्र से पीड़ा दूर नहीं होगी। केवल यह बताने भर से कि मैं समाज के इन-इन अभावों से परिचित हूं, पार नहीं पड़ने वाली। केवल यह कहने से भी कि समाज के यह अभाव मुझे पीड़ित करते है और इन अभावों को दूर किया जाना चाहिए, पार नहीं पड़ने वाली। समाज से सम्पर्क रखने वाला, हल्का सा भी चिंतन करने वाला व्यक्ति जानता है कि समाज में क्या अभाव है, समाज की क्या पीड़ा है और उस पीड़ा को दूर किया जाना जाना चाहिए इसीलिए उस पीड़ा की केवल बात कर हम कुछ नया नहीं कर रहे हैं। आपकी पीड़ा का महत्व तब ही है जब वह प्रवृत्त होती है, क्रियाशील होती है, उद्बोधक होती है, अभाव की पूर्ति में यथाशक्ति संलग्न होती है। ऐसी ही पीड़ा सात्विक पीड़ा कहलाती है और ऐसी ही पीड़ा परिवर्तन का शंख बजाती है, अभावों की पूर्ति हेतु संकल्पबद्ध होकर प्रवाह मान बनती है। श्री क्षत्रिय युवक संघ ऐसी ही पीड़ा का प्रवाह है। ऐसे में जिन लोगों की पीड़ा प्रवाह को प्राप्त नहीं होती, प्रवृत्त नहीं होती वे केवल बातें करते रहते हैं और उन्हीं बातों के बल पर संघ से महत्व की आकांक्षा रखते है। जब वह आकांक्षा पूरी नहीं होती तब शिकायतें करते है। वे यह मानते है कि उनकी अवरुद्ध पीड़ा को प्रवाहित पीड़ा द्वारा स्वीकार कर उसे दूर करने में प्रवृत्त होना चाहिए। ऐसी अव्यवहारिक चाह उन्हें अवरुद्ध ही रखती है और वे खुद की ही शिकायतों के बोझ तले दबे रहते हैं।

गांव गांव में दे रहे हैं बलिदान दिवस हेतु निमंत्रण

श्री देगराय माता मंदिर रासला में आयोजित होने जा रहे बलिदान दिवस समारोह को लेकर जैसलमेर जिले में उत्साह का वातावरण है। चैत्र शुक्ला एकादशी तदनुसार 23 अप्रैल 2021 को होने जा रहे इस कार्यक्रम के प्रचार प्रसार हेतु स्वयंसेवकों की टीमें विभिन्न क्षेत्रों में संपर्क हेतु लगातार जुटी हुई हैं। 16 मार्च (मंगलवार) को तोगा, हरभा, निंबा, पांचा, नादा, कपूरिया में व 17 मार्च (बुधवार) को संग्रामसर, बेतीना, राजगढ़, बोनाड़ा व ओला में संपर्क कर पेम्पलेट व संघ साहित्य वितरित किया गया। 18 मार्च (गुरुवार) को मेहराजोत, लाला, कराड़ा, अचला, रासला, लखासर, मदासर व नेड़ान में सभाओं का आयोजन किया गया। 19 मार्च (शुक्रवार) को दवाड़ा, मूलाना, भीमसर, सावता, भीखसर, छोड़िया, लखमना व भेलानी में सभाएं आयोजित कर निमंत्रण दिया गया। इनमें रतन सिंह बडोड़ागाँव ने दूदा तिलोकसी के इतिहास की जानकारी दी। बाबू सिंह बेरसियाला ने कहा कि संघ के हीरक जयंती वर्ष में आयोज्य 75 बड़े कार्यक्रमों में जैसलमेर संभाग के 5 बड़े कार्यक्रमों में पहला कार्यक्रम महारावल दूदा व वीरवर तिलोक सी जी का बलिदान दिवस है। पूज्य तनसिंह जी ने श्री क्षत्रिय युवक संघ के माध्यम से नव पीढ़ी को जागृत कर उन्हें लक्ष्य तक बिना थके चलने का आह्वान किया है। प्रान्त

प्रमुख तारेंद्र सिंह झिनझिनयाली ने बताया कि श्री क्षत्रिय युवक संघ की स्थापना को 75 वर्ष पूर्ण हो रहे हैं। जयपुर में 22 दिसंबर 2021 को हीरक जयंती मनाने का संकल्प लिया है। इस वर्ष को श्री क्षत्रिय युवक संघ ने हीरक जयंती वर्ष माना है। वर्ष भर ऐसे संपर्क कार्यक्रम चलते रहेंगे। संघ सामूहिक संस्कारमयी कर्म प्रणाली द्वारा सच्चे क्षत्रिय बनाने का कार्य कर रहा है। क्षत्रिय हमेशा दूसरों के लिए जीता है। हम इतिहास की थाती को विस्मृत न होने दें। बच्चों को संघ साहित्य पढ़ने हेतु दें। संघशक्ति व पथप्रेरक मंगवा कर अवश्य पढ़ें। उन्होंने सभी को श्री देगराय मंदिर परिसर में आयोजित समारोह में अधिकाधिक संख्या बल के साथ आने का निमंत्रण दिया। सभाओं में पेम्पलेट व संघ साहित्य का वितरण किया गया। इस चार दिवसीय यात्रा में 30000 का संघ साहित्य व 70 संघ शक्ति व पथ प्रेरक के ग्राहक बनाए गए। संपर्क यात्रा में गंगा सिंह जी तेजमालता, रघुवीर सिंह सरपंच ओला, अर्जुन सिंह रेवेन्यू इंस्पेक्टर, लाधु सिंह, चतुर सिंह, स्वरूप सिंह दवाड़ा, हिन्दू सिंह म्याजलार, घेवर सिंह मूलाना, रतन सिंह मूलाना, नेपाल सिंह व धर्मेंद्र सिंह भीखसर, तन सिंह भेलानी, गिरधर सिंह व चन्दन सिंह मूलाना आदि शामिल रहे।

21 मार्च (रविवार) को जवाहिर राजपूत छात्रावास जैसलमेर में रविवारीय सामुहिक शाखा में तारेन्द्रसिह जिनझिनयाली ने सभी स्वयंसेवकों से इस कार्यक्रम के प्रचार प्रसार में जुटने का आह्वान किया। 22 मार्च (सोमवार) को मूलाणा में उम्मेदसिंह बडोडागांव की उपस्थिति में कार्यकताओं की मिटिंग रखी गई जिसमें रतन सिंह बडोड़ागांव ने बताया कि महारावल दूदा व वीरवर तिलोक सी जी का बलिदान हमेशा अमर रहेगा। हमें इस कार्यक्रम में व्यवस्था की जिम्मेदारी सौंपी गई है, उसे बखूबी निभाना है।

सागु बड़ी में स्नेहमिलन

सागुबड़ी में श्री क्षात्र पुरूषार्थ फाउंडेशन की नागौर टीम द्वारा होली के

शुभ अवसर पर एक स्नेह मिलन कार्यक्रम का आयोजन 28 मार्च को किया गया। कार्यक्रम की शुरूआत पूज्य तनसिंह जी को नमन करके की गई। SKPF टीम नागौर के सदस्य जयसिंह सागु ने उपस्थित क्षत्रिय युवाओं को फाउंडेशन के उद्देश्य के बारे में बताया और फाउंडेशन के द्वारा किए गए कार्यों के बारे में जानकारी दी गई। युवाओं को फाउंडेशन से जुड़ने हेतु प्रेरित किया। साथ ही फाउंडेशन के अभिभावक श्री क्षत्रिय युवक संघ के बारे में बताया गया और संघ की हीरक जयंती समारोह के बारे में भी चर्चा की गई। दो घंटे तक चले इस कार्यक्रम में जितेंद्र सिंह, उपकार सिंह, सुमित सिंह आदि ने भी अपने विचार व्यक्त किए।

बीकानेर में होली मिलन

बीकानेर स्थित संघ कार्यालय 'नारायण निकेतन' में 28 मार्च को स्थानीय सहयोगियों का होली मिलन रखा गया। चुरु प्रांतप्रमुख राजेंद्र

सिंह आलसर ने सांघिक दृष्टिकोण से होली का महत्व बताया एवं बीकानेर में हीरक जयंती विषयक चर्चा की। सभी ने एक दूसरे के गुलाल का तिलक लगाकर होली की शुभकामनाएं दी।

मूंजासर में रुपावत समाज का स्नेहमिलन

फलोदी के निकट स्थित मूंजासर गांव में 25 फरवरी को रुपावत राठौड़ों का स्नेहमिलन संपन्न हुआ। स्नेहमिलन में क्षेत्र के लगभग 40 गांवों के समाज बंधु शामिल हुए। समाज के अध्यक्ष भंवर सिंह उदट ने रूढियों को छोड़ने का आह्वान किया। इस स्नेहमिलन में इस बात पर सभी ने प्रसन्नता व्यक्त की कि पहली बार तीन तीन पीढियां एक साथ बैठकर समाज चिंतन कर रही हैं। कार्यक्रम में भेलु गांव के रुपावतों की वंशावली का विमोचन किया गया एवं इसी प्रकार पूरे रुपावत कुल की वंशावली तैयार करने का दायित्व करणीसिंह भेलु, रामसिंह सोनड़ी व शक्ति सिंह उदट को दिया गया। 24 फरवरी को सती मां हंसकंवर के मंदिर में सत्संग व प्रसादी का आयोजन किया गया एवं 25 को प्रातः सवाई सिंह मूंजासर द्वारा मंदिर में निर्मित पोल का उद्घाटन किया गया। उद्घाटन समारोह में पूर्व मंत्री गजेंद्र सिंह खींवसर उपस्थित रहे।

क्षत्रिय सभा बीकानेर की आमसभा संपन्न

क्षत्रिय सभा बीकानेर की आमसभा बजरंग सिंह रोयल की अध्यक्षता में 21 मार्च को महासभा के प्रांगण (बीदासर हाउस) में संपन्न हुई। बैठक में नवनियुक्त अध्यक्ष करणप्रताप सिंह सिसोदिया को कार्यग्रहण करवाया गया। भंवरसिंह उद्ट ने त्रैवार्षिक आय व्यय का ब्यौरा प्रस्तुत किया जिसका उपस्थित सभी ने अनुमोदन किया। नंदलाल सिंह ने विगत कार्यकाल में करवाये गए निर्माण कार्यों एवं सामाजिक गतिविधियों की जानकारी दी। उदयसिंह पीरकामड़िया ने क्षत्रिय ट्रस्ट का लेखा जोखा प्रस्तुत किया। इस अवसर पर बीदासर हाउस विवाद का निपटारा आपसी समझौते से करने व करणी कन्या छात्रावास को लेकर भी चर्चा की गई। निवर्तमान अध्यक्ष बजरंग सिंह रोयल व नवनियुक्त अध्यक्ष करणप्रताप सिंह ने सबका आभार व्यक्त किया।

नारायण सिंह गोठड़ा को पत्नी शोक

संघ के वरिष्ठ स्वयंसेवक नारायण सिंह गोठड़ा की पत्नी **श्रीमती नयन कंवर** का 20 मार्च को देहावसान हो गया। परमेश्वर दिवंगत आत्मा को अपने श्रीचरणों में स्थान देवें एवं शोक संतप्त परिवार को संबल प्रदान करें।

श्रीमती नयन कंवर

IAS/ RAS
तैयारी करने का राजस्थान का सर्वश्रेष्ठ संस्थान
स्प्रिंग बोर्ड
Spring Board
Springboard Academy, Main Riddi Siddi choraha, Opposite Bank of Bsroda, Gopalpura bypass Jaipur
website : www.springboardindia.org

जारी है हीरक जयन्ती वर्ष कार्यक्रमों की श्रृंखला

सेतरावा

(पेज तीन से लगातार जारी)

कार्यक्रम में आगामी 30 जुलाई को कातर में पूज्य नारायण सिंह जी रेड़ा की जयंती मनाने को लेकर भी चर्चा की गई। उदयपुर संभाग में संघ तीर्थदर्शन कार्यक्रम बेणेश्वर धाम में आयोजित हुआ। 14 मार्च को आयोजित इस कार्यक्रम में मेवाड़ तथा वागड़ प्रान्त के समाजबन्धु सम्मिलित हुए। कार्यक्रम में केन्द्रीय कार्यकारी गंगा सिंह साजियाली, संभाग प्रमुख भंवर सिंह बेमला, डॉ कमलसिंह बेमला, पृथ्वीराज सिंह मोटगांव, हरेन्द्र सिंह खरोडिया, भंवर सिंह कनोडिया, भंवर सिंह सलाड़िया तथा गुमान सिंह वलाई ने अपने विचार व्यक्त किए। सभी ने समाज, राष्ट्र और मानवता के हितार्थ क्षात्र-प्रवृत्ति के पुनरुत्थान की आवश्यकता बताई। इसी प्रकार मेवाड़ वागड़ संभाग का त्रैमासिक स्नेहमिलन भी 13-14 मार्च को गुमान सिंह वलाई के फार्म हाउस पर आयोजित हुआ जिसमें केंद्रीय कार्यकारी गंगा सिंह साजियाली तथा संभाग प्रमुख भंवर सिंह बेमला स्वयंसेवकों सहित उपस्थित रहे। गुड़ामालानी प्रान्त के उण्डखा गांव में भी 14 मार्च को संघ तीर्थदर्शन कार्यक्रम का आयोजन हुआ जिसमें संभाग प्रमुख कृष्ण सिंह राणीगांव ने उपस्थित समाजबंधुओं से अपनी संस्कृति, धर्म और राष्ट्र के प्रति कर्त्तव्य को पहचानकर उसका पालन करने की बात कही। गणपत सिंह बूठ, महिपाल सिंह चूली तथा मल्ल सिंह उण्डखा ने भी अपने विचार व्यक्त किए व संघ तीर्थदर्शन अभियान और हीरक जयन्ती के संबंध में समाजबंधुओं को जानकारी प्रदान की।

बाड़मेर संभाग के शिव प्रान्त में ग्राम मुंगेरिया में संघ तीर्थ दर्शन कार्यक्रम के तहत स्नेह मिलन का आयोजन 28 मार्च रविवार को सम्पन हुआ। कार्यक्रम को संबोधित करते हुए केंद्रीय कार्यकारी देवी सिंह माडपुरा ने बताया कि क्षत्रिय द्वारा क्षात्रधर्म के पालन में शिथिलता बरतने की वहज से समाज मे क्षति हुई। इस क्षति की पूर्ति हेतू पूज्य श्री ने श्री क्षत्रिय युवक संघ की स्थापना की। संघ धर्म के मार्ग पर चलने के लिए संस्कार निर्माण का कार्य करता है इसी के तहत इस गांव में भी संघ के शिविर हुए और इसीलिए यह गांव संघ के स्वयंसेवकों के लिए तीर्थ बन गया। भवानी सिंह मूंगेरिया ने संघ तीर्थ दर्शन कार्यक्रम की भूमिका बतायी एवं मूंगेरिया से संघ के संबंध की चर्चा की। कार्यक्रम में मुंगेरिया व आस पास के समाज बंधुओं के साथ साथ शिव, बाड़मेर, हरसाणी, जिंझनियाली, फतेहगढ़ क्षेत्र से भी संघ के स्वयंसेवक व सहयोगी उपस्थित रहे। कार्यक्रम का संचालन प्रांतप्रमुख राजेंद्र सिंह भिंयाड ने किया। मुंगेरिया में संघ के 5 शिविर 1993, 1998, 2004, 2008 व 2013 में संपन्न हो चुके हैं। इस गांव के लोग स्वयं को सौभाग्यशाली मानते हैं कि यहां पर संघ में संस्थापक पूज्य श्री तन सिंह जी, द्वितीय संघ प्रमुख पूज्य नारायण सिंह जी तथा वर्तमान संघ प्रमुख श्री भगवान सिंह जी रोलसाहबसर का प्रवास हो चुका है। गांव में संघ के अनेक स्वयंसेवक हैं और गांव के लोग संघ के कार्यक्रमों में सक्रिय भागीदारी निभाते हैं। बीकानेर संभाग में दुलचासर गांव स्थित गाजण माता मंदिर में हीरक जयन्ती के उपलक्ष्य में 21 मार्च को जनसंपर्क कार्यक्रम रखा गया। भगीरथ सिंह सेरूणा ने कार्यक्रम का संचालन करते हुए उपस्थित ग्रामवासियों को संघ के विचारदर्शन तथा कार्यप्रणाली की विस्तृत जानकारी प्रदान की। कार्यक्रम के दौरान जेठू सिंह पुंदलसर, जुगल सिंह, रेवत सिंह, छैलू सिंह, विजय सिंह टेऊ, पंचायत समिति सदस्य नत्थू सिंह व रतन सिंह सहित अनेकों समाजबन्धु उपस्थित रहे। इसी दिन कोटासर गांव के श्री भोमियाजी मंदिर में भी स्नेहमिलन का आयोजन हुआ जिसमें भागीरथ सिंह सेरूणा व कल्याण सिंह झंझेऊ सहयोगियों व समाजबंधुओं सहित उपस्थित रहे। कार्यक्रम में बन्ने सिंह, माल सिंह, अगर सिंह, शेर सिंह (सरपंच), रणवीर सिंह, भगवान दास, श्याम लाल जोशी सहित अनेकों ग्रामवासियों ने संघ एवं हीरक जयन्ती वर्ष के संबंध में जानकारी प्राप्त की। उदयपुर संभाग में प्रतापगढ़ के जलोदा में 21 मार्च को संघ तीर्थ दर्शन कार्यक्रम संभाग प्रमुख भंवर सिंह बेमला की उपस्थिति में सम्पन्न हुआ। उन्होंने कहा कि यहाँ पर स्थित गंगेश्वर महादेव मंदिर में सितंबर, 2014 में संघ का एक प्राथमिक प्रशिक्षण शिविर आयोजित हो चुका है उसी की स्मृति को पुनः जगाने के लिए यह कार्यक्रम आयोजित हुआ है। लक्ष्मण सिंह जलोदा जागीर ने अपने संबोधन में कहा कि 1963 में पूज्य तनसिंह जी एवं आयुवान सिंह जी भी यहां पधारे थे। कार्यक्रम के दौरान जलोदा जागीर निवासी सत्यपाल सिंह, नरवर सिंह, उदय सिंह, लोकेंद्र सिंह बम्बोरी तथा कमल सिंह बेमला ने भी उपस्थित समाजबंधुओं से अपने विचार साझा किए। बालोतरा संभाग में मोकलसर के निकटवर्ती लुदराडा गांव के पहाड़ेश्वर महादेव मन्दिर में भी 21 मार्च को संघ तीर्थ दर्शन कार्यक्रम आयोजित हुआ। कार्यक्रम के दौरान उपस्थित समाजबंधुओं को संबोधित करते हुए संभागप्रमुख मूल सिंह काठाड़ी ने कहा कि यहाँ 1957 में संघ का सिवाणा क्षेत्र में पहला शिविर आयोजित हुआ था। जसवंत सिंह देवन्दी ने उस शिविर के संस्मरण सुनाए। कार्यक्रम के दौरान चतुर सिंह सागु, हनवंतसिंह मवड़ी, जैतमालसिंह बिशाला, राणसिंह टापरा तथा वीरम सिंह वरिया ने भी अपने विचार साझा किए। क्षेत्र के अनेकों गणमान्य समाजबन्धु कार्यक्रम में सम्मिलित हुए। जयपुर संभाग में डीसेंट स्कूल जामडोली के प्रांगण में हीरक जयन्ती के उपलक्ष्य में एक पारिवारिक स्नेहमिलन का आयोजन 21 मार्च को हुआ। केंद्रीय कार्यकारी गजेंद्र सिंह आऊ तथा संभाग प्रमुख राजेन्द्र सिंह बोबासर ने स्नेहमिलन में उपस्थित समाज बंधुओं को हीरक जयन्ती वर्ष तथा उसके अंतर्गत आयोजित हो रही विभिन्न गतिविधियों की जानकारी प्रदान की। नटवर सिंह किशनपुरा, भवानी सिंह मलारना, विक्रम सिंह चतरपुरा, दिगेंद्र सिंह सनोखर, गिरिराज सिंह विजयपुरा, डॉ. प्रताप सिंह, बीरबल सिंह भेड़खो तथा किशोर सिंह सायला ने भी संघ के संबंध में अपने विचार साझा किए।

इसी दिन जयपुर की मुरलीपुरा कोलोनी स्थित माताजी मंदिर, नानू नगर में पारिवारिक स्नेहमिलन रखा गया। कार्यक्रम को संबोधित करते हुए भवानी सिंह मूंगेरिया ने संघ की स्थापना की पृष्ठभूमि की जानकारी देते हुए बताया कि किस प्रकार 1944 में उपजा विचार 1946 में संघ की वर्तमान कार्यप्रणाली में परिवर्तित हुआ। उन्होंने संघ की विगत 75 वर्षों की यात्रा के बारे में भी बताया। केन्द्रीय कार्यकारी गजेन्द्रसिंह आऊ ने वर्तमान परिस्थितियों में संघ की भूमिका विषय पर अपनी बात कही। कार्यक्रम का संचालन संभाग प्रमुख राजेंद्र सिंह बोबासर ने किया। बाड़मेर संभाग के चौहटन प्रान्त में विरात्रा माता मंदिर में संघ तीर्थ दर्शन कार्यक्रम संभाग प्रमुख कृष्ण सिंह राणीगांव की उपस्थिति में सम्पन्न हुआ। उन्होंने कार्यक्रम को संबोधित करते हुए कहा कि जहां भी संघ के चरण पड़े हैं वह स्थान हमारे लिए तीर्थ ही है और जब संघ का शिक्षण, संघ के संस्कार हमारे जीवन में उतर आएं तो हमारा सम्पूर्ण जीवन ही तीर्थ बन जाता है। तब हमारा जीवन सभी के लिए प्रेरणादायक बन जाता है। कार्यक्रम में चौहटन, आकोड़ा, देदूसर, दुधवा, राणीगांव, गंगाला, गंगासरा, बूठ, उण्डखा, चूली, गोहड़ का तला, ढोक, मिये का तला, केलनोर, तुड़बी आदि अनेक गांवों से समाजबन्धु सम्मिलित हुए। नागौर संभाग के लाडनूं-सुजानगढ़ प्रांत के तेहनदेसर गांव में भी तीर्थदर्शन कार्यक्रम का आयोजन हुआ जिसमें प्रांतप्रमुख विक्रम सिंह ढींगसरी सहयोगियों सहित उपस्थित रहे। उन्होंने आगामी 30 जुलाई को पूज्य नारायणसिंह जी रेड़ा की जयन्ती मनाने तथा हीरक जयन्ती वर्ष के दौरान प्रान्त में आयोजित होने वाली गतिविधियों पर चर्चा की। इस दौरान राजूसिंह, करणीसिंह, तेजसिंह, नंदूसिंह, नरेन्द्रसिंह, भरतसिंह, बबलूसिंह, गोरधनसिंह सहित अनेकों समाजबन्धु उपस्थित रहे। मेवाड़-मालवा प्रान्त की दो दिवसीय बैठक धनोप माता मंदिर (भीलवाड़ा) में 20-21 मार्च को आयोजित हुई जिसमें संभाग प्रमुख बृजराजसिंह खारड़ा, संभाग के सभी प्रांतप्रमुख तथा स्वयंसेवक सम्मिलित हुए। बैठक के दौरान स्वयंसेवकों द्वारा लिए गए हीरक जयन्ती वर्ष संबंधी दायित्वों की प्रगति पर चर्चा की गई तथा शेष सत्र की कार्ययोजना पर चर्चा की गई। बैठक की समाप्ति पर 21 मार्च को संघ तीर्थदर्शन का कार्यक्रम भी रखा गया जिसमें आस पास के गांवों से समाजबन्धु सम्मिलित हुए। गुजरात में पालिताणा में 20-21 मार्च को समग्र गुजरात की राजपूत संस्थाओं का एक स्नेह मिलन गोहिलवाड़ राजपूत समाज के तत्वावधान में सम्पन्न हुआ जिसमें पूरे राज्य की सौ से अधिक राजपूत संस्थाओं के प्रतिनिधि सम्मिलित हुए। संघ की ओर से केंद्रीय कार्यकारी महेंद्र सिंह पांची ने उपस्थित संभागियों को संघ की विस्तृत जानकारी प्रदान की। मंगलसिंह धोलेरा, भागीरथसिंह कनाड़, शक्ति सिंह कोटड़ा नायाणी भी कार्यक्रम में उपस्थित रहे। पालिताणा तहसील के बड़ेली गांव में भी 21 मार्च को संघ तीर्थ दर्शन कार्यक्रम आयोजित हुआ जिसमें केंद्रीय कार्यकारी महेंद्र सिंह पांची सहयोगियों सहित उपस्थित रहे तथा समाजबंधुओं को हीरक जयन्ती वर्ष व संघ तीर्थदर्शन कार्यक्रम के संबंध में जानकारी प्रदान की। सौराष्ट्र संभाग के मोरचंद प्रांत के चूड़ी-बपाड़ा तथा लाकडीया गांव में भी संघ तीर्थ दर्शन कार्यक्रम सम्पन्न हुआ जिसमें वरिष्ठ स्वयंसेवक छनुभा पच्छेगाम ने कहा कि जिस प्रकार एक बीज को वृक्ष विशाल बनाने के लिए धैर्य और लगातार देखरेख की आवश्यकता होती है उसी प्रकार संघ के शिक्षण को भी हमारे आचरण में ढालने के लिए सतत साधना आवश्यक है। भाल प्रांत में भी 21 मार्च को धंधुका राजपूत छात्रावास तथा पांची, साठिड़ा, खरड़, कोटडिया, चामा आदि गांवों में संपर्क यात्रा का आयोजन किया गया जिसमें वरिष्ठ स्वयंसेवक प्रवीण सिंह धोलेरा, वीरमदेव सिंह धोलेरा, भागीरथ सिंह धोलेरा तथा जयपाल सिंह धोलेरा सम्मिलित रहे। इस दौरान हीरक जयन्ती वर्ष के अंतर्गत आयोजित हो रही गतिविधियों की जानकारी समाजबंधुओं को प्रदान की गई। बनासकांठा प्रान्त में थराद तहसील में संघ तीर्थदर्शन अभियान के अंतर्गत संपर्क यात्रा का आयोजन हुआ। क्षेत्र के कुभारा, लेडाऊ, इंढाटा गांवों में 21 मार्च को आयोजित इस संपर्क यात्रा में प्रांतप्रमुख अजीतसिंह कुणघेर, थानसिंह लोरवाड़ा, भगवानसिंह वलादर, श्रवणसिंह वलादर सहयोगियों व समाजबंधुओं सहित सम्मिलित हुए।

(शेष पृष्ठ 7 पर)

जलोदा

मूंगेरिया

(पृष्ठ छह का शेष) हीरक जयंती....

संपर्क यात्रा के दौरान समाजबंधुओं को संघ के हीरक जयन्ती वर्ष और संघ तीर्थदर्शन कार्यक्रम की जानकारी दी गई तथा उनसे सांघिक गतिविधियों में अधिकाधिक सहभागी बनने का निवेदन किया गया। जोधपुर संभाग में शेरगढ़ प्रान्त में हीरक जयन्ती वर्ष के अंतर्गत 22 मार्च को कार्ययोजना बैठक का आयोजन देवराज जी का मंदिर, बावकान तालाब, सेतरावा में किया गया। बैठक में संभागप्रमुख चंद्रवीर सिंह देणोक ने स्वयंसेवकों से हीरक जयन्ती वर्ष के शेष भाग में आयोजित होने वाले कार्यक्रमों के बारे में चर्चा की। प्रान्त प्रमुख भैरू सिंह बेलवा ने संघ तीर्थ दर्शन कार्यक्रम की जानकारी दी। हरि सिंह ढेलाणा ने क्षेत्र में अब तक लगे शिविरों के बारे में जानकारी दी। बैठक के दौरान खिंयासरिया व देचू में तीर्थदर्शन कार्यक्रम, सेखाला में चार दिवसीय शिविर का आयोजन तथा खिंयासरिया में शाखा प्रारम्भ करने के निर्णय लिए गए। देचू सरपंच भवानी सिंह, लाल सिंह बुड़किया, सौभाग्य सिंह आसरलाई, कान सिंह खियासरिया, आम सिंह सेखाला सहित अनेकों समाजबन्धु बैठक में उपस्थित रहे। हीरक जयंती वर्ष के तहत आयोजित कार्यक्रमों की श्रृंखला में श्री क्षात्र पुरुषार्थ फाउंडेशन द्वारा 21 मार्च को राजपूत छात्रावास पिलानी में एक बैठक का आयोजन किया गया। उल्लेखनीय है कि यह वही छात्रावास है जहाँ रह कर पूज्य तनसिंह जी ने स्नातक स्तर की पढाई की थी और इसी छात्रावास के एक कमरे में 1944 की दीपावली की रात को वे श्री क्षत्रिय युवक संघ की स्थापना को संकल्पित हुए थे। बैठक का प्रारंभ शेखावाटी के प्रांतप्रमुख जुगराज सिंह द्वारा प्रार्थना के साथ किया गया। फाउंडेशन की केन्द्रीय समिति के सदस्य यशवर्धन सिंह झेरली ने फाउंडेशन का परिचय देते हुए कहा कि यह हम सब के लिए गर्व की बात है कि आज हम उस स्थान पर समाज का चिंतन कर रहे हैं जहाँ फाउंडेशन के अभिभावक श्री क्षत्रिय युवक संघ के विचार का अंकुरण हुआ था। उन्होंने फाउंडेशन की अब तक की यात्रा की भी जानकारी दी। संघ के केन्द्रीय कार्यकारी रेवंतसिंह पाटोदा ने कहा कि आज देशभर से श्री क्षत्रिय युवक संघ को जानने, समझने और जुड़ने के लिए संदेश आते हैं लेकिन जिस क्षेत्र में संघ का विचार उत्पन्न हुआ वहां संघ के प्रति उदासीनता है, नयी पीढी को संघ की जानकारी ही नहीं है यह हम सबके लिए विचारणीय है। यह वर्ष संघ का हीरक जयंती वर्ष है और पूरा वर्ष त्योंहार के रूप में उत्साह से मनाया जा रहा है। इस उत्सव में हमें भी शामिल होने के लिए तत्पर होना चाहिए। यह स्थान संघ के स्वयंसेवकों के लिए तीर्थस्थल है जहाँ संघ के प्रणेता ने अपने जीवन के चार वर्ष व्यतीत किए एवं उनके अंतर में संघ का संकल्प पैदा हुआ। पिलानी क्षेत्र के समाज बंधुओं को भी इसका महत्व समझना चाहिए कि जब भी संघ की बात होती है पिलानी का जिक्र अवश्य होता है। सभी के परिचय के बाद कार्यक्रम का विसर्जन हुआ। 21 मार्च को ही झुंझुनूं जिले के खेतड़ी व झुंझुनूं में भी संपर्क किया गया। झुंझुनूं के श्री शार्दुल राजपूत छात्रावास के विद्यार्थियों से संवाद करते हुए बताया गया कि संघ हमारे सामाजिक भाव को जागृत करता है। यह समाज हमारी मां है इस भाव को जागृत कर उसके प्रति दायित्व को जागृत करता है। दायित्वबोध की जागृति ही व्यक्ति को जिम्मेदार नागरिक बनाती है और वह अपनी शक्तियों का सर्वश्रेष्ठ उपयोग कर समाज व राष्ट्र का उपयोगी अंग बनता है। विद्यार्थियों से अनौपचारिक चर्चा कर उनके कैरियर संबंधी प्रश्नों के भी जबाब दिए गये। इसी दिन जैसलमेर स्थित संघ कार्यालय 'तनाश्रम' में जैसलमेर शहर के सहयोगियों की बैठक रखी गई जिसमें EWS आरक्षण बाबत माननीय मुख्यमंत्री की हाल ही की घोषणाओं के लिए आभार व्यक्त किया गया एवं आगामी दिनों में जैसलमेर जिले में फाउंडेशन के कार्यों बाबत योजना बनाई गई। हाल ही में सालासर में संपन्न शिविर

कर आये साथियों ने अपने शिविर के अनुभव साझा किए। इसी दिन जोधपुर जिले के भोपालगढ़ कस्बे में तहसील स्तरीय बैठक रखी गई जिसमें आसपास के गांवों के समाज बंधु शामिल हुए। बैठक में महेंद्र सिंह नानण ने फाउंडेशन के उद्देश्य, कार्यप्रणाली एवं क्रियाकलापों की जानकारी दी। फाउंडेशन की स्थापना के बाद विगत दो वर्षों में किए गए प्रयासों की जानकारी साझा की। संघ के स्वयंसेवक एवं फाउंडेशन के सहयोगी चैनसिंह साथिन ने श्री क्षत्रिय युवक संघ के हीरक जयंती वर्ष के कार्यक्रमों की जानकारी दी एवं हम कैसे सहयोगी बन सकते हैं इस बाबत चर्चा की। 21 मार्च की शाम बाड़मेर शहर की बैठक रखी गई जिसमें केन्द्रीय समिति सदस्य आजाद सिंह शिवकर व महेंद्र सिंह तारातरा ने संघ व फाउंडेशन बाबत जानकारियां साझा की। आगामी दिनों में बाड़मेर शहर में किए जाने वाले कार्यक्रमों की योजना बनी एवं सकारात्मक युवाओं को फाउंडेशन के विचार से परिचित करवा कर उनके संयोजन बाबत उपायों पर चर्चा की गई।

जोधपुर शहर प्रांत का शाखा भ्रमण

जोधपुर शहर प्रांत की शाखाओं का सामूहिक शाखा भ्रमण कार्यक्रम 20 मार्च को रखा गया। जोधपुर शहर में लगने वाली शाखाओं के 50 स्वयंसेवकों ने जोधपुर शहर के विभिन्न ऐतिहासिक स्थलों का भ्रमण किया। साईंस पार्क से प्रारंभ हुआ भ्रमण कार्यक्रम मंडोर दुर्ग, मंडोर देवलियों का अवलोकन करते हुए मंडोर उद्यान में सायंकालीन शाखा के साथ संपन्न हुआ। भ्रमण दल का नेतृत्व व मार्गदर्शन लक्ष्मणसिंह गुड़ानाल ने किया एवं ऐतिसाहिक स्थलों से संबंधित जानकारियां साझा की।

सेंगर राजवंश की उत्पत्ति

सेंगर राजपूतो की उत्पत्ति बारे मे कई मत हैं। राजपूत वंशावली में लिखा है कि चंद्रवंशी महामना ने अंग देश की स्थापना की। अंग के राजवंश में आगे चलकर जयद्रथ, दृनरथ, जनमेजय, कर्ण हुए। उसके पुत्र विकर्ण के सौ पुत्र हुए। जो शतकर्णी कहलाते थे।। शतकर्णी से ही धीरे धीरे सेंगरी, सिंगरी, सिंगर व सेंगर हुए। यहां के गौतमी पुत्र शतकर्णी ने नर्मदा नदी तक क्षेत्र जीतकर अपने राज्य में मिलाया था। परंतु लेखक का यह मत इतिहास की कसौटी पर खरा नही उतरता क्योंकि इतिहास के सभी विद्वान जानते हैं कि शतकर्णी नामधारी गौतमी पुत्र शतकर्णी आदि सातवाहन वंशी शासक थे जिन्होंने ईसा की प्रथम शताब्दी से 225 ई तक शासन किया था। वशिष्ठ पुत्र पुलमावि शतकर्णी के 16वें वर्ष के गुहालेख में उसके आदित्य ब्राह्मण बताया है। अंधकार युगीन भारत के शोधकर्ता विधान केपी जायसवाल ने लिखा है कि कदम्ब चटू सातवाहन ब्राह्मणो के एक शाखा थी इन प्रमाणों से स्पष्ट है शतकर्णी और सेंगर अलग अलग थे। क्षत्रिय जातियों की सूची मैं बहादुर सिंह बीदासर ने लिखा है कि सेंगर ऋषि श्रृंग के वंशज हैं और श्रृंग से सेंगर हो गए। प्राचीन ग्रंथो में दो ऋषि श्रृंगी हुए। एक तो विभाण्डक के पुत्र ऋषि श्रृंग जिन्होंने दशरथ का पुत्रेष्ठि यज्ञ करवाया । दूसरे शमीक पुत्र ऋषि श्रृंग हुए जिसने जनमेजय के पिता परीक्षित को श्राप दिया। पर इन ऋषियों से सेंगर राजपूतों की उत्पत्ति हुई है इसका कोई प्रमाण नहीं है अतः इस मत को मानना भी समाचीन नही है। कुमारपाल चरित (13वी शताब्दी) में सेंगरो को डाहलिया लिखा है। चंद्रवंशी हैहय के कुल में आगे चलकर कलचुरी राजपूत हुए जिनके अधीन चेदि देश मे डाहल प्रदेश भी था। डाहल के कलचुरी डाहल कहलाते थे अतः सेंगर कलचुरी हैहय वंश की खाँप होनी चाहिए और यह किसी सेंगर नाम के व्यक्ति के वंशज होने चाहिए। सेंगर का राज्य डाहल प्रदेश पर था। डाहल का राज्य कमजोर पड़ने पर कर्णदेव ने चर्मयवती के संगम पर नया राज्य स्थापित किया और कर्णावती को अपनी राजधानी बनाया। कर्णावती का क्षेत्र रीवा राज्य के अंतर्गत था। सेंगरो का एक राज्य (करनार) भी था। यहां के राजा विशांक देव के 20वे वंशज जगम्मन शाह ने बाबर का सामना किया था। कनार के सेंगर क्षत्रिय कनारधणी कहलाते थे। कनार व जगमनपुर के आस पास इनके 57 गांव हैं। इसी वंश के रेलीचन्द्रदेव ने भरेह को अपनी अलग राजधानी बनाया था। तेहरवीं सदी में फफेंद के कुछ सेंगरो ने लखनेसर (जिला-बलिया) में भी अपना राज्य स्थापित किया। यह राज्य 8वीं सदी तक रहा। इस वंश की भरेह (जिला-इटावा) एक छोटी सी रियासत थी। इस वंश में भिकरा के राजा नकोटा के राव तथा कदम्ब सेंगरा की शाखाएं अंकित की गई हैं। परंतु चटू इक्ष्वाकु वंश था तथा कदम्ब ब्राह्मण थे, ये सेंगरो की शाखाए नहीं थी।। करहया सेंगरो की शाखा मानी जाती है।

संदर्भ- रघुनाथ सिंह जी कालीपहाड़ी कृत 'क्षत्रिय राजवंश' प्रेषक- वरुण प्रताप सिंह सिशोदिया, मेरठ, उत्तरप्रदेश

(पृष्ठ एक का शेष)

हम सानिध्य...

यही संघ का, पूज्य तनसिंह जी का, पूज्य केशरिया ध्वज का भी संदेश है और यही विदाई का भी संदेश है। शेखावाटी प्रान्त के सालासर गांव स्थित गौरीशंकर आश्रम में 11 से 13 मार्च तक आयोजित इस शिविर का संचालन संघ के केंद्रीय कार्यकारी रेवन्त सिंह पाटोदा ने किया। स्वागत के समय शिविरार्थियों से कहा गया कि संघ कर्मशीलता का अभ्यास है। संसार में श्रेष्ठ लोगों की कर्मशीलता ही शुभ को घटित करती है, कर्मशीलता के अभाव में श्रेष्ठताएं भी जड़ता को प्राप्त होकर अपसंस्कृति की वृद्धि में सहयोगी ही बनती हैं। पूज्य तनसिंह जी के कुछ करने के संकल्प का मूर्तिमान स्वरूप है संघ जिसके दर्शन, स्पर्श और सानिध्य का लाभ हमें इन तीन दिन में उठाना है। विदाई के दिन माननीय संघप्रमुख श्री ने शिविरार्थियों को अपना सान्निध्य और आशीर्वाद प्रदान किया। जुलियासर व सालासर के ग्रामवासियों ने व्यवस्था में सहयोग किया। शिविर में अनेक लोग पहली बार या अनेक वर्षों बाद आये इसलिए सभी ने स्वयं की ऊर्जा को जागृत किया एवं निरंतर संपर्क और क्रियाशीलता की चाह को पुष्ट किया। शिविर में सीकर, झुंझुनूं, बीकानेर, नागौर, बाड़मेर, जैसलमेर, जालोर, पाली, कोटा, जयपुर, बूंदी, जोधपुर आदि जिलों से स्वयंसेवक पहुंचे। जालोर संभाग के आहोर प्रान्त के पाँचोटा गांव स्थित नागणेशी माता मंदिर के प्रांगण में 11 से 14 मार्च तक चार दिवसीय प्रशिक्षण शिविर का आयोजन हुआ। संघ के केंद्रीय कार्यकारी प्रेम सिंह रणधा ने शिविर का संचालन करते हुए शिविरार्थियों को क्षात्रधर्म का अर्थ समझाते हुए कहा कि अमृत की रक्षा और विष का विनाश करना ही क्षात्रधर्म है। क्षत्रिय ने सदैव संसार को सही मार्ग दिखाया है, हम सभी को भी अपने पूर्वजों से, हमारे गौरवशाली अतीत से प्रेरणा लेकर क्षात्रधर्म का पालन करने योग्य बनना है। अपनी रजशक्ति को सतोगुण की ओर उन्मुख कर के हम समाज, राष्ट्र और मानवता के हित में जीवन बिताएं, इसी का शिक्षण संघ हमें दे रहा है। इस शिविर में जालोर, आहोर, पाली, सिरोही, जसवंतपुरा, सांचोर, रानीवाड़ा प्रान्तों के 140 से अधिक राजपूत युवाओं ने प्रशिक्षण प्राप्त किया। रामसिंह वलदरा, गणपत सिंह पेणावा, ओबसिंह पेणावा, माधोसिंह नारवणा, कुंदन सिंह थूम्बा, जेठूसिंह कंवला, शैतान सिंह रोडला, ईश्वरसिंह आकोरापादर तथा अन्य समाजबंधुओं ने व्यवस्था में सहयोग किया।

जयपुर की महिला शाखा का फागोत्सव

जयपुर की महिला शाखा द्वारा 20 मार्च को जयपुर में संघशक्ति कार्यालय में फागोत्सव कार्यक्रम आयोजित किया गया। कार्यक्रम में लगभग 30 महिलाएं शामिल हुईं। सभी महिलाओं ने साथ मे भजन और गीत गाकर आनंद लिया एवं घूमर का कार्यक्रम भी रखा गया। कार्यक्रम में सब ने अल्पाहार का सामुहिक रसास्वादन किया। शाखा के अंत मे माननीय संघप्रमुख श्री का सानिध्य प्राप्त हुआ। संघप्रमुख श्री ने सभी का परिचय प्राप्त किया। ढाई घंटे तक चले फागोत्सव की जानकारी ली एवं अपना आशीर्वाद प्रदान किया।

वृद्ध सहयोगियों की पूछी कुशलक्षेम

माननीय संघ प्रमुख श्री 12 व 13 मार्च को शेखावाटी के प्रवास पर रहे। इस दौरान उन्होंने 12 मार्च को सीकर में निवासरत अपने वयोवृद्ध सहयोगी रतनसिंह नंगली एवं केशरीसिंह खोरी से उनके आवास पर जाकर भेंट की एवं उनके स्वास्थ्य की कुशलक्षेम पूछी। दोनों वृद्ध स्वयंसेवक लंबे समय से बीमार हैं। इसी दिन संघप्रमुख श्री सीकर स्थित दुर्गा महिला विकास संस्थान भी गये एवं छात्रावास की बालिकाओं से भेंट की। 13 मार्च को सालासर में आयोजित शिविर में पधारे।

राजपूत सेवा समिति रानी का प्रतिभा सम्मान समारोह

राजपूत सेवा समिति रानी (पाली) का प्रथम प्रतिभा सम्मान समारोह 21 मार्च को आशापुरा माता मंदिर प्रांगण नाडोल में संपन्न हुआ। समारोह में रानी तहसील की 40 प्रतिभाओं का सम्मान किया गया। समारोह के मुख्य अतिथि चन्द्रभान सिंह भाटी, अतिरिक्त जिला कलेक्टर ने गीता के कर्म के सिद्धांत के अनुरूप पूर्वजों द्वारा बताये मार्ग का अनुसरण करने की सीख दी। उन्होंने हर क्षेत्र में नये आयाम स्थापित करने का आह्वान किया। उपखंड अधिकारी पुष्पा कंवर सिसोदिया ने बालिका शिक्षा की बात करते हुए आने वाले समय में महिलाओं को परिवार के साथ साथ समाज में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाने के लिए तैयार होने का आह्वान किया। विकास अधिकारी भुवनेश्वर सिंह ने आर्थिक आधार पर आरक्षण की जानकारी दी वहीं परबतसिंह खिंदारागांव ने श्री क्षात्र पुरुषार्थ फाउंडेशन के प्रयासों की जानकारी साझा की। वीर बालिका छात्रावास रानी की बालिकाओं ने श्री क्षत्रिय युवक संघ के मार्ग का अनुसरण करने की आवश्यकता जताई। समारोह में अनेक लोगों ने प्रतिभाओं के प्रोत्साहन हेतु सहयोग राशि की घोषणा की।

कुलवंत सिंह बने लंदन में अध्यक्ष

मूल रूप से जोधपुर जिले की बालेसर तहसील के गढा गांव निवासी विक्रमसिंह भाटी के पुत्र कुलवंत सिंह लंदन स्थित ब्रुनेल विश्वविद्यालय के छात्रसंघ अध्यक्ष चुने गए हैं। 4-5 मार्च को हुए विश्वविद्यालय के 52वें छात्रसंघ चुनावों में कुलवंत सिंह ने अपने प्रतिद्वंदी जेम्स रीड को 312 मतों से हराया। एक समाचार पत्र में छपी खबर के अनुसार इस विश्वविद्यालय में 153 देशों के 22000 विद्यार्थी अध्ययनरत हैं।

पूजा कंवर राज्य स्तर पर सम्मानित

हैंडबॉल में चार बार राष्ट्रीय स्तर पर अपना उत्कृष्ट खेल दिखा चुकी एवं 8वीं महिला एशियान हैंडबॉल चैंपियनशिप में भारत का प्रतिनिधित्व कर चुकी पूजा कंवर सांवलोदा लाडखानी (सीकर) को राजस्थान महिला एवं बाल विकास विभाग द्वारा राज्यस्तरीय विशिष्ट सम्मान से नवाजा गया है। जिला प्रशासन सीकर ने पूजा कंवर को 'बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ' अभियान का ब्रांड एंबेसडर भी बनाया है।

हर्षवर्धन ने जीता रजत पदक

मूलरूप से पाली जिले की सोजत तहसील के ढुंढा गांव निवासी एवं वर्तमान में जयपुर में निवासरत गजेन्द्र सिंह जैतावत के पुत्र हर्षवर्धन सिंह ने नेपाल के पोखरा में आयोजित अंतरराष्ट्रीय एथलेटिक्स प्रतियोगिता में 100 मीटर दौड़ व गोला फैंक में रजत पदक जीत कर समाज व राष्ट्र का मान बढाया है। जयपुर के झोटवाड़ा स्थित आदर्श विद्या मंदिर का छात्र हर्षवर्धन पहले भी दो बार राष्ट्रीय एथलेटिक्स प्रतियोगिताओं में पदक जीत चुका है।

राव शेखा जी शाखा का होली धमाल कार्यक्रम

जयपुर शहर प्रांत की राव शेखा जी शाखा का होली धमाल कार्यक्रम 28 मार्च को शाखा स्थल (21 नंबर बस स्टैंड, सिरसी रोड जयपुर) पर कोरोना गाईड लाईन का पालन करते हुए संपन्न हुआ। संघ के संचालन प्रमुख लक्ष्मण सिंह जी बैंण्याकाबास के सानिध्य में संपन्न इस कार्यक्रम में सभी ने 6 फीट की दूरी पर अपने स्थान पर खड़े होकर धमाल में भागीदारी निभाई एवं सावधानी पूर्वक एक दूसरे के गुलाल का टीका लगाया। कार्यक्रम में सभी संभागीयों को शाखा द्वारा निःशुल्क मास्क का वितरण किया गया। कार्यक्रम को संबोधित करते हुए संचालन प्रमुख लक्ष्मणसिंह बैंण्याकाबास ने होली पर्व का महत्व बताते हुए कहा कि भक्त प्रहलाद ने एकनिष्ठ होकर ईश्वर की प्राप्ति की साधना में जीवन के सभी संघर्षों का सामना किया, हर परिस्थिति में अपने ईष्ट का प्रसन्नता पूर्वक स्मरण जारी रखा, कभी डींगें नहीं हांकी और परिणाम स्वरूप साक्षात ईश्वर को अपने भक्त की रक्षा के लिए आना पड़ा, उन्ही प्रहलाद की एकनिष्ठता की स्मृति में हम यह पर्व मनाते हैं। इस पर्व से हमें ये ही शिक्षा लेनी चाहिए की हम हमेशा एकनिष्ठ रहें, ईश्वर के प्रति, समाज के प्रति और हमारे संगठन के प्रति। हम सभी श्री क्षत्रिय युवक संघ से परिचित हैं, हमने संघ को समझने का प्रयत्न किया है, संघ ने हमें स्वीकार किया है तो हमारा भाव भी संघ के प्रति एकनिष्ठ होना चाहिए इसी से संघ भी हमारे में अवतरित हो पाएगा। उन्होंने सनातन संस्कृति के चारों बड़े पर्वों रक्षाबंधन, विजयादशमी, दीपावली और होली का महत्व बताया। केंद्रीय कार्यकारी गजेन्द्र सिंह जी आऊ ने श्री क्षत्रिय युवक संघ का परिचय दिया व हीरक जयंती वर्ष के बारे में सभी को बताया कि इस वर्ष जयपुर को हीरक जयंती में मेजबानी का अवसर मिला है तो ज्यादा से ज्यादा प्रचार प्रसार में सहयोग करें व संघ को घर घर तक पहुंचाने का प्रयास करें। उन्होंने वर्तमान समय में लागू कोरोना गाइड लाइन व सावधानी के बारे में भी जानकारी दी। इस अवसर पर क्षेत्र के राजनीतिक कार्यकर्ता आसु सिंह सुरपुरा ने सभी को गाय के गोबर से बने गुलाल पैकेट का वितरण किया। वार्ड नंबर 48 के पार्षद प्रतिनिधि शक्ति सिंह ने भी अपने विचार रखते हुए सभी को होली शुभकामनाएं दी। कार्यक्रम में जयपुर प्रांतप्रमुख सुधीर सिंह ठाकरियावास, दौसा प्रांतप्रमुख मदन सिंह बामणीया, जयपुर ग्रामीण प्रांतप्रमुख देवेन्द्र सिंह बरवाली अपने सहयोगी स्वयंसेवकों एवं सहयोगियों सहित उपस्थित रहे। कोलोनीवासी एवं शाखा के स्वयंसेवकों ने भी अपनी भागीदारी निभाई। कार्यक्रम का संचालन संभागप्रमुख राजेंद्र सिंह बोबासर ने किया।

श्री संघशक्ति प्रकाशन प्रन्यास (मालिक) के लिए मुद्रक व प्रकाशक लक्ष्मणसिंह द्वारा गजेंद्र प्रिन्टर्स, सांगों का रास्ता, किशनपोल बाजार, जयपुर-302003 (दूरभाष 2313462) से मुद्रित एवं ए/8, तारानगर, झोटवाड़ा, जयपुर- 302012 **(दूरभाष: 2466353 व 2466387)** से प्रकाशित। सम्पादक- लक्ष्मणसिंह। Email:- pathprerak1997@gmail.com, Web site:- www.shrikys.org